रिकॉर्ड :– मुझको सहारा देने वाले... ॐ पिताश्री 10/4/63

ओम् शान्ति। भगवान को जब पाया जाता है तो फिर समझ में नहीं आता कि क्या देवें। भक्तिमार्ग में तो बहुत कुछ फूल–फल आदि देते रहते हैं; परन्तु भगवान जब खुद आते हैं, वो तो आकर स्वर्ग की बादशाही देते हैं। उनके ... बदली हम क्या देवें! आगे तो राम–कृष्ण साधु–संत आदि सभी को भगवान समझते थे; लेकिन अब बच्चों को पता पड़ा है, भगवान खुद आए हैं तो उनको क्या देना चाहिए। जैसे वो बाप खुद सब कुछ दे देते हैं वैसे हम भी सब कुछ उनको दे देवें, तन–मन–धन। भगवान भी वो ही चीज़ें; परन्तु एवरीथिंग न्यू देते हैं। तन–मन सब नया देते हैं; इसलिए यह सौदा मशहूर है; परन्तु भक्त लोग यह नहीं जानते कि भगवान किसको कहा जाता है। भक्त याद करते रहते है। उनको फादर भी कहा जाता और नॉलेजफुल कहा जाता है। तुमको ईश्वर का ज्ञान है। ईश्वर में जो नॉलेज है, वो और कोई में नहीं है। इसलिए गॉड को ही नॉलेजफुल कहा जाता है। कहते हैं– ईश्वर जानी–जाननहार है; परन्तु क्या जाणे हैं? क्या सभी की जन्म पत्री को बैठ देखता होगा? इतने अंकीचार मनुष्य हैं, यह तो कोई भी देख न सके। दरकार ही नहीं। वो तो गॉड फादर है, हेविन स्थापन करते हैं। फिर हेविन से हेल कैसे बनता है– यह भी तुम जानते हो। बच्चे ही इन बातों को समझ सकते, और कोई मनुष्य को यह समझ में नहीं आता। वो तो कहेंगे– जबकि गॉड सर्वशक्तिवान है, तो क्या उनमें इतनी ताकत नहीं जो कोई को भी समझा सके! बाप कहते हैं– यह हो नहीं सकता। सभी समझ जाय फिर तो स्वर्ग सारा भर जाए। स्वर्ग में तो लिमिट है। हरेक बात में लिमिट होती है। सभी नहीं जा सकते। सभी मनुष्यों को अथवा सभी धर्म वालों को वहाँ जाना न है। कितनी गुंजाइश है! मनुष्य समझते हैं, वो तो बुद्धिवानों की बुद्धि है, कोई को भी झट समझा सकते; परन्तु नहीं, यह अनादि बना–बनाया ड्रामा है। सभी को अपना पार्ट मिला हुआ है। समझाने की युक्ति है। नहीं तो कहते, अगर ईश्वर ही ड्रामा के वश है तो मनुष्य भी ड्रामा के वश हो गया, फिर क्या कर सकते हैं, जब आना होगा तब आवेंगे। ड्रामा अनुसार दुख–सुख भोगना है। तो अनायास जब दुख पूरा होगा तो सुख आ जावेगा। इस बात में अटक जावेंगे। पहले–2 तो उनको यह पता न है कि वो हमारा बाप है। बाप भी है और फिर राजाओं का राजा बनाने लिए नॉलेज देते हैं। मनुष्य से देवता बनाने की नॉलेज देते हैं। बहुत सहज है। बाप कहते हैं– स्टूडेंट लाइफ में तो तुम जन्म–जन्मांतर रहते आए हो, भिन्न–2 टीचर करते आए हो। तो स्टूडेंट लाइफ में ज़रूर टीचर की याद रहती है। भल वो टीचर्स तो बदलते रहते; परन्तु फिर भी टीचर तो याद रहेगा ना। यहाँ तो देखो, माया कितनी प्रबल है! जानते भी हैं कि भगवान पढ़ाते हैं मनुष्य से देवता बनाने, फिर भी उनको याद करना भूल जाते। सो देवता माना स्वर्ग का मालिक। हम स्टूडेंट लाइफ में हैं, भगवान पढ़ाए रहे हैं, फिर भगवान क्यों न याद रहना चाहिए! अज्ञान काल में सारा दिन बुद्धि में पढ़ाई और टीचर की याद रहती है, यहाँ क्यों भूल जाते! तब बाप कहते हैं– अहो माया! तुम कितनी प्रबल हो! भगवान खुद आकर समझाते हैं– इतना ऊँच ते ऊँच मर्तबा देते हैं, उनको क्यों भूल जाते हो! जब तक इम्तहान हो तब तक पढ़ना ही है। अच्छा, बाप को भूल जाते हो, टीचर को क्यों भूलना चाहिए! अपन से बातें करनी चाहिए– हमको ऐसा बाप–टीचर भूल क्यों जाता है! गौर करना चाहिए। ऐसे–2 बाबा से बातें करें, गौर करें, तो बाप भी मदद देवें। यह नॉलेज है पढ़ने और पढ़ाने की। बाबा इस समय, इस जन्म में ही सभी को पढ़ाते हैं। फिर कब भी यह पढ़ाई मिलनी न है। राज्य योग है ही सतयुग के लिए। द्वापर–कलियुग में कोई सिखला न सके। अगर सिखलावे तो राजाई कहाँ! टीचर पढ़ाते हैं। उनका नाम तो एक ही होता। बदली थोड़े ही होता है। यह गीता का ज्ञान भी भगवान ने दिया है, फिर नाम बदली कर कृष्ण का डाल दिया है। टीचर का नाम थोड़े ही बदलाया जाता है। अभी तुम बच्चे जानते हो– शिवबाबा नॉलेजफुल, जानी–जाननहार है। वहाँ बैठे भी जानते हैं– यह क्या पुण्य करते हैं, क्या पाप करते हैं। मनुष्य समझते हैं– पाप करने से प० पाप का फल देते हैं, पुण्य करने से पुण्य का फल देते हैं। ज़रूर वो हमारे

पाप–पुण्य को जानते होंगे। इसी को ही नॉलेज कहा जाता है। अच्छा, फिर उनको ब्लिसफुल, रहमदिल क्यों कहा जाता? सभी के पापों पर रहम कर उनके पाप उड़ाए देवे, यह भी नहीं हो सकता। कहते हैं– मैं सभी पतितों पर इस समय आकर महर करता हूँ। बरोबर पतित–पावन नाम उनका ही है। धर्मराज रूप में सज़ा भी वो देते हैं। ऐसे नहीं कि वो अपना काम छोड़ देंगे। सभी का हिसाब–किताब चुक्तू करने लिए वो कयामत के समय आते हैं। वो भी दिखलाते हैं, मैं कैसे सज़ाएँ देता हूँ। धर्मराज का खाता तो अलग हो गया ना। बच्चों ने जान लिया है, वो ही गॉड फादर बाप है, सत्गुरु भी वो है। नॉलेजफुल है तो ज़रूर नॉलेज देते हैं। हमको त्रिकालदर्शी बनाते हैं। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप सत् है, चेतन है। उनको क्रियेटर कहते हैं। चेतन बीजरूप है। बीज तो यहाँ अथाह है। जानवरों के, पक्षों(पक्षियों) के, सभी के बीज होते हैं। जीनालॉजिकल(जीनियोलॉजिकल) ट्री का पहले तो कोई एक होगा ना, जि(स)से रचना हुई होगी। यह सभी बातें बाप बैठ समझाते हैं। यह बातें मनुष्य ही समझ सकते। जानवर तो नहीं समझ सकते। कहते हैं– मनुष्यों की जीवन वर्थ नॉट ए पैनी होती है। जानवर की चमड़ी भी काम में आती है, चूहे–मछलियाँ आदि सभी खा जाते हैं। मनुष्य की चमड़ी कोई काम में नहीं आती। चीनी लोग चूहे आदि सभी खा जाते हैं। मनुष्य का माँस कोई नहीं खावेंगे। एक/दो का माँस नहीं खाते। लड़ाई में जब यह लोग पकड़े जाते हैं तो घोड़ों को भी काट कर खाते हैं। तो बाप समझाते हैं, वास्तव में मनुष्य का जीवन बहुत ऊँच है; परन्तु ज्ञान नहीं तो किस काम का नहीं। नॉलेज बिगर मनुष्य वर्थ नॉट ए पैनी हैं। दुखी ही दुखी हैं। हम दुखी थे ना! एकदम कौड़ी जैसे थे। कहाँ हीरे जैसा मनुष्य, कहाँ कौड़ी जैसा मनुष्य। फर्क कितना है! इस समय साधु–सन्यासी आदि सभी कौड़े जैसे हैं। ल०ना० की चमक–धमक देखो कैसी है! जो भी सन्यासी देखेंगे, पूजा ज़रूर करते हैं। रिलीजस माइंडेड बनते ही तब है जब मंदिरों आदि में जाते हैं। फिर नफरत आती है। सन्यासियों के झाड़े के होंगे, तो उनकी आत्मा को नफरत ज़रूर आवेगी। कहेंगे, गृहस्थ तो नर्क है। फिर जो कनवर्ट होते हैं, उनको भी नफरत दिलाते हैं। हम तो नफरत करते हैं पुरानी दुनिया से सो भी ड्रामा अनुसार। बाबा कहते हैं– देह सहित अपन को तथा इस छी–2 सारी दुनिया को भूल जाओ। मामेकम् याद करो। वो बाप भी है, टीचर भी है, सत्गुरु भी है। थ्री फोर्स वाला है, फिर भी उनकी याद क्यों नहीं रहती! वण्डर है ना! बाबा कहते हैं– मैं भी भूल जाता हूँ। तीनों रूप में उनको याद करना चाहिए। वो बाप–टीचर–गुरु है– यह पक्का याद कर लेने से भी खुशी का पारा चढ़ेगा। अथाह धन देने वाला है टीचर के रूप में, फिर गुरु के रूप में भी बहुत देते हैं। ऐसे बाबा की याद क्यों नहीं आती! यह भी जानते हैं, उनको भूलने से ही हम आधा कल्प दुखी होते हैं और फिर आधा कल्प के लिए बाप–टीचर–सत्गुरु हमको सुख देने आए हैं। फिर भी ऐसे बाप–टीचर–गुरु की मत पर क्यों नहीं चलते! बाप से पूछते हैं– बाबा, याद क्यों नहीं रहती है? वो बाप–टीचर–सत्गुरु और फिर धर्मराज भी है। फिर भी तुम उनको भूल विकर्म क्यों करते हो? किसको दुख क्यों देते हो? काम–कटारी चलाना, यह भी दुख हुआ ना! क्रोध से भी किसको दुख क्यों देते हो! बाबा कोई श्राप नहीं देते; परन्तु यह एक लॉ समझाते हैं। मु(ख्य) है ही काम और क्रोध। इनकी बहुत सम्भाल रखनी है। अबलाओं पर अत्याचार होते हैं, वो भी क्रोध से। काम–कटारी चलाना और क्रोध करना, इन दोनों बात में दुख होता है। मोह–लोभी से दुख की बात नहीं होती। वो हुआ अपनी अवस्था पर मदार। कोई मर जावेगा तो दुख होगा; परन्तु यह काम–क्रोध का दुख मु(ख्य) है। किसकी दिल को रंझाना न चाहिए। बाबा कहते– तुम किसको काम–कटारी से मारेंगे तो दुखी हो मरेंगे, सज़ा भी बहुत पावेंगे और अपन को बदनाम भी करेंगे, बड़ों को भी बदनाम करेंगे; इसलिए बाबा बार–2 समझाते हैं– किसको भी दुख न दो, नहीं तो दुखी हो मरेंगे। भल स्वर्ग में तो आवेंगे; परन्तु पद भ्रष्ट होंगे। यह सभी बच्चों को सावधानी दी जाती है; क्योंकि यह टेप–रिकॉर्ड तो बच्चों के लिए ही हैं। नया तो कोई नहीं सुनते हैं। तो किसको भी दुख देते हैं तो दुखी हो मरेंगे– यह तो कॉमन बात है, नहीं तो ऐसे योग में बैठे–2 शरीर छोड़ देंगे। ऐसे बहुत साधु–सन्यासी भी बैठे–2 शरीर छोड़ते हैं। बाबा को अनुभव है–

सिंध में एक सन्यासी ने शरीर छोड़ा था तो सन्नाटा हो गया था। बाबा ने समझा कोई शुद्ध आत्मा ने शरीर छोड़ा है। वो तो अपन को ब्रह्मोहम् समझते हैं। तो शांत में बैठते हैं। मुख से कुछ उच्चारते नहीं हैं। उच्चारने से फिर इतनी शान्त नहीं फैलेगी। अपन तो जानते हैं, ऐसे बाबा की याद में बैठे–2 जाना है; जैसे संदेशी जाती है। अन कॉनशियसनेस भिन्न–2 प्रकार की है। जाना भी ऐसे ही है। इसलिए प्रैक्टिस करना चाहिए। अप(न) को आत्मा, ब्रह्माण्ड का मालिक समझो। देह–अभिमान से निकल जाते हैं, फिर ऐसी भासना आती है जैसे कि शरीर छूटता है। बाबा को अनुभव है। जैसे कि शरीर है नहीं। फीलिंग ऐसी होती जैसे कि हम खतम होते हैं। अभ्यास में रहते हैं ना! तो बच्चों को भी यह शिक्षा बहुत अच्छी मिलती है। उठते–बैठते बुद्धि से ऐसे समझो। बाबा कहते हैं– तुम ब्रह्माण्ड के मालिक थे। तुम हमारे पास बैठे थे। हे आत्माएँ! जो भी सभी धर्मों की आत्माएँ हैं, सभी मेरे पास थी ना! मैंने उन्हों को भेजा पार्ट बजाने। प्रीसेप्टर्स को हमने भेजा तो ज़रूर उनकी सम्प्रदाय को भी भेजता हूँ ना; परन्तु यह है सभी बना–बनाया ड्रामा, जो फिरता रहता है। बाकी किसको भेजता नहीं हूँ। तो तुम ब्रह्माण्ड के रहवासी हो। फिर ... वापिस मेरे पास आना है। इस दुनिया से दिल उठा लेनी चाहिए। फिर मैं तुमको भेज दूँगा नई दुनिया में। तब तक यह सृष्टि गुल–2 हो जावेगी। मनुष्य से देवता बन जाते हैं। शूद्र से ब्राह्मण बन हम पढ़ रहे हैं। फिर ब्राह्मण से देवता बनेंगे। बच्चे ब्राह्मण हो गए, तो फिर बाबा पास मुक्तिधाम चले जावेंगे। फिर बाबा भेज देंगे। अभी बाबा कहते हैं– मनमनाभव। तुमको मेरे पास आना है। प्रैक्टिकल में बाप समझाते हैं, जो बाबा स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। यह आत्माओं से बात करते हैं। आत्मा ही दुख भोगती है; परन्तु जब शरीर साथ है। बाबा भी वहाँ शरीर दे सा० कराए सज़ा भोगाते हैं। तो अभी बाप आकर आत्माओं को पढ़ाते हैं। यह पढ़ाई वण्डरफुल है। और कोई कह नहीं सकते कि तुम ब्रह्माण्ड के मालिक हो, तुमको हम लेने आए हैं, फिर भेज देंगे। यह है अपन साथ पढ़ाई की बातें करना। मोस्ट बिलवेड शिवबाबा, मोस्ट बिलवेड शिव टीचर, मोस्ट बिलवेड शिव सत्गुरु। तो ऐसे मोस्ट बिलवेड को कितना याद करना चाहिए! बाबा तो कहते– जो भी समय मिले, एक/दो को याद दिलाओ। बाबा ने भी बच्चों को कह दिया है, हमको याद दिलाओ। तो इनमें भी कितना फायदा होगा। फायदा उनको होगा जो ज्ञान में होंगे। अच्छा, ज्ञान की धारणा न होती, बाबा को याद करने से विकर्म तो विनाश होंगे, सज़ाओं से बच जाएँगे। नहीं तो सज़ा खानी पड़ेगी। यह भी युक्ति है। बच्चों को पता नहीं पड़ता है कि याद से हमारे पाप कटते हैं। अगर यह निश्चय होता तो क्यों नहीं याद करते! बहुतों को तो पता ही नहीं है कि याद करने से हम डंडों से छूटेंगे। योग में रहने से धारणा भी हो सकती है। योग से बुद्धि रूपी तिजोरी प्युअर होती है तो धन भी धारण होता है। तो वो हमारा मोस्ट बिलवेड बाप है। उनको क्यों नहीं याद करते! मु(ख्य) है ही बाप–टीचर–गुरु। आगे कन्याएँ पढ़ती नहीं थीं; इसलिए मु(ख्य) बाप और पति ही होता था। गुरु भी नहीं करते थे। भारत की बात करते हैं। यह सारी नॉलेज है ही भारत पर। हम दूसरे धर्मों में क्यों जावें! हमारा है मोस्ट बिलवेड देवता धर्म। भारतवासी अपने धर्म को खुद नहीं जानते, भूल गए हैं। हिन्दू धर्म कहने से कोई टेस्ट नहीं आती। हम गॉड–गॉडेज़ धर्म के थे– यह किसको याद नहीं रहता। ड्रामा अनुसार यह दिरदशा(दुर्दशा) भी होनी है ज़रूर। बाबा फिर भी कहते हैं– मोस्ट बिलवेड बाप–टीचर–गुरु को याद करने से तुम्हारा बहुत कल्याण होगा। तुम समझते हो– वो हमारा फादर, टीचर किस प्रकार से हैं। तो फिर सुनाना भी पड़े। उनकी याद नहीं आती तो फिर सुनाते भी नहीं। समझते हैं, सीखें ही क्यों, जो फिर सुनाना पड़े। अच्छा, बापदादा, मीठी–2 मम्मा का लकी स्टार्स प्रति गुडमॉर्निंग। ॐ। हैलो, सर्व सेन्टरों के बहनों और भाइयों को निर्वैर की खास याद स्वीकारम्। कल गुरुवार, जयपुर, दिल्ली, जालन्धर से ..... हो वापस बॉम्बे लौकिक–अलौकिक सर्विस पर जा रहा हूँ। अच्छा, सभी को नमस्ते।